प्रारंभिक परीक्षा

प्रम्बानन मंदिर (PRAMBANAN TEMPLE)

संदर्भ:

भारत के प्रधानमंत्री और इंडोनेशिया के राष्ट्रपति ने इंडोनेशिया में प्रम्बानन मंदिर परिसरों में एक अंतरराष्ट्रीय संरक्षण और जीर्णोद्धार परियोजना का उद्घाटन किया।

प्रम्बानन मंदिर के बारे में

- **प्रम्बानन, जिसे स्थानीय रूप से रोरो जोंग्रंग (लोरो जोंग्रंग) के रूप में भी जाना जाता है, इंडोनेशिया का सबसे बड़ा हिंदू मंदिर परिसर है और दक्षिण पूर्व एशिया में सबसे बड़ा है।**
- इसे इस क्षेत्र में शास्त्रीय शैव मंदिर वास्तुकला का बेहतरीन उदाहरण माना जाता है।
- यह योग्याकार्टा (Yogyakarta) के विशेष क्षेत्र और मध्य जावा की सीमा पर स्थित है।
- मंदिर का निर्माण लगभग 850 ईस्वी में संजय राजवंश (8वीं-9वीं शताब्दी ईस्वी) के शासनकाल के दौरान किया गया था।
- मंदिर की दीवारों पर विस्तृत पत्थर की नक्काशी है जिसमें रामायण और भागवत पुराण के दृश्यों को दर्शाया गया है।
- मंदिर को बिना गारे (mortar) के 'सूखी इंटरलॉकिंग पत्थर चिनाई' (dry interlocking stone masonry) का उपयोग करके बनाया गया था, जो भूकंप के प्रति प्रतिरोध को बढ़ाता है।
- इसे 1991 में यूनेस्को (UNESCO) विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया और 1998 में इंडोनेशिया की राष्ट्रीय सांस्कृतिक संपत्ति नामित किया गया।

ब्रह्मोस मिसाइल प्रणाली (BRAHMOS MISSILE SYSTEM)

संदर्भ:

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की इंडोनेशिया यात्रा के दौरान, दोनों देशों ने समझौतों पर हस्ताक्षर किए, जिसमें इंडोनेशिया ने भारत से ब्रह्मोस मिसाइलें खरीदने का अपना इरादा व्यक्त किया है।

ब्रह्मोस मिसाइल प्रणाली के बारे में

ब्रह्मोस एक सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल है जो लगभग मैक 2.8-3 (Mach 2.8–3) की गति से उड़ान भरने में सक्षम है, जो इसे वर्तमान में सेवा में मौजूद सबसे तेज़ क्रूज मिसाइलों में से एक बनाती है।

मल्टी-प्लेटफॉर्म लॉन्च क्षमता: मिसाइल को कई प्लेटफार्मों से लॉन्च किया जा सकता है:

- भूमि-आधारित मोबाइल लॉन्चर (Land-based mobile launchers)
- युद्धपोत और पनडुब्बियां (Warships and submarines)
- सुखोई Su-30MKI जैसे लड़ाकू विमान

- तटीय रक्षा बैटरियां (Coastal defence batteries)

परिचालन सीमा और सटीकता (Operational Range and Precision)

- ब्रह्मोस की मारक क्षमता वेरिएंट के आधार पर लगभग 290-500 किमी है, और यह उन्नत मार्गदर्शन प्रणालियों से लैस है जो भूमि और समुद्री लक्ष्यों के खिलाफ उच्च-सटीक हमलों को सक्षम करती है।

भारतीय सशस्त्र बलों का प्रमुख हथियार: इस मिसाइल को भारतीय सेना के तीनों अंगों में तैनात किया गया है:

- भारतीय थल सेना – भूमि-हमला (land-attack) मिशन
- भारतीय नौसेना – पोत-रोधी (anti-ship) युद्ध
- भारतीय वायु सेना – हवा से लॉन्च की जाने वाली (air-launched) मारक क्षमता

भविष्य के विकास

- **नेक्स्ट-जेनरेशन ब्रह्मोस:** कथित तौर पर भारत और रूस एक उन्नत ब्रह्मोस-II हाइपरसोनिक मिसाइल पर काम कर रहे हैं, जिसके मैक 5 (Mach 5) से ऊपर की गति प्राप्त करने की उम्मीद है।
- **निर्यात बाजारों का विस्तार:** भारत सक्रिय रूप से कई देशों के साथ आगे के निर्यात सौदों पर बातचीत कर रहा है, जो रक्षा बाजार में अपनी वैश्विक उपस्थिति का काफी विस्तार कर सकता है।

मिशन दृष्टि (MISSION DRISHTI)

संदर्भ:

बेंगलुरु स्थित अंतरिक्ष स्टार्ट-अप GalaxEye ने घोषणा की कि 'मिशन दृष्टि' के साथ संचार टूट गया है।

मिशन दृष्टि के बारे में

- **मिशन दृष्टि एक 190 किलोग्राम का पृथ्वी अवलोकन उपग्रह (Earth observation satellite) है जिसे बेंगलुरु स्थित अंतरिक्ष स्टार्ट-अप गैलेक्सीआई द्वारा विकसित किया गया है।**
- **प्रक्षेपण यान:** स्पेसएक्स फाल्कन 9 (SpaceX Falcon 9)।
- यह दुनिया का पहला चालू (operational) OptoSAR उपग्रह है, जो एक ही उपग्रह प्लेटफॉर्म पर इलेक्ट्रो-ऑप्टिकल (EO) और सिंथेटिक एपर्चर रडार (SAR) सेंसर को एकीकृत करता है।
- इसका उद्देश्य भूमि और समुद्री क्षेत्रों की निर्बाध निगरानी के लिए एक स्वदेशी सभी मौसम (all-weather) वाली पृथ्वी अवलोकन क्षमता विकसित करना है।

हिमालयन याक (HIMALAYAN YAK)

संदर्भ:

वैज्ञानिकों ने उच्च-ऊंचाई वाले हिमालयन याक की निगरानी के लिए इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) आधारित स्मार्ट कॉलर विकसित किया है।

हिमालयन याक के बारे में

- **हिमालयन याक एक पालतू, लंबे बालों वाली गोजातीय प्रजाति (bovine species) है, जो ठंडे, उच्च-ऊंचाई वाले वातावरण के अनुकूल है और हिमालयी समुदायों को दूध, मांस, फाइबर, गोबर (ईंधन) और परिवहन प्रदान करती है।**
- यह 8,000 और 18,000 फीट के बीच उच्च ऊंचाई वाले अल्पाइन (alpine) क्षेत्रों में पाया जाता है।
- मादाएं झुंड में रहती हैं, जबकि वयस्क नर आम तौर पर प्रजनन के मौसम को छोड़कर एकान्त (solitary) रहते हैं।
- IUCN रेड लिस्ट: सुभेद्य (Vulnerable - VU)
- भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम 1972: अनुसूची II (Schedule II)
- CITES (साइट्स): परिशिष्ट I (Appendix I)

नर्मदा नदी

संदर्भ:

मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र की सरकारें नर्मदा परियोजना से संबंधित लंबित मुद्दों पर एक समझौते पर पहुंचीं।

नर्मदा नदी के बारे में

- **नर्मदा नदी प्रायद्वीपीय भारत में पश्चिम की ओर बहने वाली सबसे बड़ी नदी है।**
- **उद्गम:** मध्य प्रदेश में मैकल पहाड़ियों (Maikal Hills) में अमरकंटक में नर्मदा कुंड (समुद्र तल से लगभग 1,057 मीटर ऊपर)।
- यह खंभात की खाड़ी (Gulf of Khambhat) के माध्यम से अरब सागर में गिरने से पहले मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात से होकर पश्चिम की ओर बहती है।
- यह विंध्य रेंज (उत्तर) और सतपुड़ा रेंज (दक्षिण) के बीच एक भ्रंश घाटी (rift valley - graben) से होकर बहती है।
- सीमित तलछट जमाव (sediment deposition) के कारण यह डेल्टा के बजाय एक ज्वारनदमुख (estuary) बनाती है।
- **उल्लेखनीय जलप्रपातों में शामिल हैं:**
    - कपिलधारा जलप्रपात (अमरकंटक के पास)
    - धुआंधार जलप्रपात (जबलपुर के पास)
- सरदार सरोवर परियोजना नर्मदा नदी पर सबसे बड़ी बहुउद्देश्यीय नदी घाटी परियोजनाओं में से एक है।

प्रमुख सहायक नदियाँ

- **बायां तट:** तवा (सबसे बड़ी), बंजर, शेर, शक्कर, दूधी, गंजाल, छोटा तवा, गोई, कर्जन।
- **दाहिना तट:** हिरन, बरना, कोलार, कनार, मान, उरी, ओरसंग।

ल्यूसीन (LEUCINE)

संदर्भ:

शोधकर्ताओं ने पाया है कि ल्यूसीन, एक ब्रांच्ड-चेन अमीनो एसिड (BCAA), बाहरी माइटोकॉन्ड्रियल झिल्ली (outer mitochondrial membrane) में प्रोटीन के समय से पहले टूटने को रोककर एक सुरक्षा कवच के रूप में कार्य करता है, जिससे स्वस्थ माइटोकॉन्ड्रियल कार्य को बनाए रखने में मदद मिलती है।

ल्यूसीन के बारे में

- ल्यूसीन एक आवश्यक (essential) अमीनो एसिड है, जिसका अर्थ है कि इसे मानव शरीर द्वारा संश्लेषित (synthesized) नहीं किया जा सकता है और इसे आहार के माध्यम से प्राप्त किया जाना चाहिए।
- यह आइसोल्यूसीन (isoleucine) और वेलिन (valine) के साथ ब्रांच्ड-चेन अमीनो एसिड (BCAAs) परिवार से संबंधित है।
- यह मांसपेशियों के विकास, ऊतकों की मरम्मत (tissue repair) और ऊर्जा उत्पादन का समर्थन करता है।

ब्रांच्ड-चेन अमीनो एसिड (BCAAs)

- BCAAs में ल्यूसीन, आइसोल्यूसीन और वेलिन शामिल हैं।
- ये आवश्यक अमीनो एसिड हैं और इन्हें भोजन के माध्यम से प्राप्त किया जाना चाहिए। वे प्रोटीन संश्लेषण, मांसपेशियों के चयापचय (muscle metabolism) और ऊतकों की मरम्मत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्रदर्शन ग्रेडिंग सूचकांक (PGI - PERFORMANCE GRADING INDEX)

संदर्भ:

शिक्षा मंत्रालय ने राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के लिए प्रदर्शन ग्रेडिंग सूचकांक (PGI) 2.0 (2025-26) और जिलों के लिए प्रदर्शन ग्रेडिंग सूचकांक (PGI-D) जारी किया है।

प्रदर्शन ग्रेडिंग सूचकांक (PGI) के बारे में

- **PGI शिक्षा मंत्रालय के स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग (DoSEL) द्वारा विकसित एक मूल्यांकन ढांचा (assessment framework) है।**
- यह संकेतकों के एक सामान्य सेट का उपयोग करके स्कूली शिक्षा में राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों और जिलों के प्रदर्शन का मूल्यांकन करता है।
- इसका उद्देश्य साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण को बढ़ावा देना और प्रदर्शन-आधारित ग्रेडिंग के माध्यम से सुधार को प्रोत्साहित करना है।

PGI 2.0 (राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के लिए)

- 70 संकेतकों का उपयोग करके 1,000-बिंदु के पैमाने पर राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों का आकलन करता है।

- **2 श्रेणियों को कवर करता है:**
    - परिणाम (Outcomes)
    - शासन और प्रबंधन (Governance & Management)
- **संकेतकों को 6 डोमेन में बांटा गया है:**
    - सीखने के परिणाम और गुणवत्ता (Learning Outcomes & Quality)
    - पहुँच (Access)
    - बुनियादी ढाँचा और सुविधाएँ (Infrastructure & Facilities)
    - समता (Equity)
    - शासन प्रक्रियाएँ (Governance Processes)
    - शिक्षक शिक्षा और प्रशिक्षण (Teacher Education & Training)
- UDISE+, PARAKH Rashtriya Sarvekshan, PM POSHAN, PRABANDH, और Vidyanjali पोर्टलों के डेटा का उपयोग करता है।

जिलों के लिए प्रदर्शन ग्रेडिंग सूचकांक (PGI-D)

- 70 संकेतकों का उपयोग करके 600-बिंदु के पैमाने पर जिलों के प्रदर्शन को मापता है।
- यह सीखने के परिणाम, बुनियादी ढांचा, डिजिटल शिक्षा, स्कूल सुरक्षा, शासन और शिक्षकों की उपलब्धता जैसे प्रमुख क्षेत्रों को कवर करता है।
- UDISE+, PARAKH Rashtriya Sarvekshan, और PRABANDH पोर्टल के डेटा पर आधारित।

क्वार जलविद्युत परियोजना (KWAR HYDROELECTRIC PROJECT)

संदर्भ:

हाल ही में भारी वर्षा के कारण निर्माणाधीन 540 मेगावाट की क्वार जलविद्युत परियोजना के पास एक बड़ा भूस्खलन हुआ।

क्वार जलविद्युत परियोजना के बारे में

- क्वार जलविद्युत परियोजना 540 मेगावाट की एक जलविद्युत परियोजना है जिसे जम्मू और कश्मीर के किश्तवाड़ जिले में चिनाब नदी पर विकसित किया जा रहा है।
- इसे 'रन-ऑफ-द-रिवर' (RoR) परियोजना के रूप में डिज़ाइन किया गया है, जो एक बड़ा भंडारण जलाशय (storage reservoir) बनाए बिना बिजली उत्पन्न करती है।

नॉर्वेजियन सागर (NORWEGIAN SEA)

संदर्भ:

यूके (UK) के लड़ाकू विमानों ने हाल ही में एक रूसी समुद्री गश्ती विमान (maritime patrol aircraft) को रोक (intercept) दिया, जब वह नॉर्वेजियन सागर में काम कर रहे एक वाहक स्ट्राइक समूह (carrier strike group) के बार-बार पास आया।

नॉर्वेजियन सागर के बारे में

- **नॉर्वेजियन सागर आर्कटिक महासागर का एक सीमांत सागर (marginal sea) है, जो उत्तरी अटलांटिक महासागर और आर्कटिक महासागर के बीच स्थित है।**
- यह सागर नॉर्वे (पूर्व), आइसलैंड (पश्चिम), ग्रीनलैंड (उत्तर-पश्चिम), और बार्ट्स सागर (Barents Sea) (उत्तर-पूर्व) से घिरा हुआ है। यह जान मायेन रिज (Jan Mayen Ridge) द्वारा ग्रीनलैंड सागर से अलग होता है।
- यह बोरियल (boreal) और आर्कटिक जलवायु क्षेत्रों के बीच एक महत्वपूर्ण संक्रमण क्षेत्र (transition zone) के रूप में कार्य करता है।
- यह यूरेशियन प्लेट और उत्तरी अमेरिकी प्लेट के अलग होने के कारण बना है।
- गर्म 'उत्तरी अटलांटिक धारा' (North Atlantic Current) और ठंडी 'पूर्वी आइसलैंड धारा' (East Iceland Current) यहाँ मिलती हैं, जिससे मछली पकड़ने के समृद्ध मैदान (rich fishing grounds) बनते हैं।

मुख्य परीक्षा

भारत-इंडोनेशिया संबंध

संदर्भ:

भारत के प्रधानमंत्री ने इंडोनेशिया की राजकीय यात्रा (State Visit) की, जिसके दौरान दोनों देशों ने रक्षा, समुद्री सुरक्षा, व्यापार, डिजिटल प्रौद्योगिकी, कनेक्टिविटी और बहुपक्षीय सहयोग में अपनी व्यापक रणनीतिक साझेदारी (Comprehensive Strategic Partnership) को मजबूत करने के लिए एक संयुक्त वक्तव्य (Joint Statement) अपनाया।

इंडोनेशिया भारत के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

- **भू-रणनीतिक स्थिति और समुद्री चोकप्वाइंट:** इंडोनेशिया हिंद और प्रशांत महासागरों के जंक्शन पर स्थित है और प्रमुख समुद्री चोकपॉइंट्स (maritime chokepoints) को नियंत्रित करता है, जो इसे भारत की इंडो-पैसिफिक रणनीति और समुद्री सुरक्षा के लिए अपरिहार्य बनाता है।
    - उदाहरण के लिए: सबांग बंदरगाह (Sabang Port) पर सहयोग, समुद्री सहयोग पर भारत-इंडोनेशिया साझा दृष्टिकोण (2018), और मलक्का, सुंडा और लोम्बोक जलडमरूमध्य से निकटता।
- **संसाधन सुरक्षा और आपूर्ति शृंखला लचीलापन:** इंडोनेशिया आसियान (ASEAN) में भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है और ऊर्जा सुरक्षा तथा हरित संक्रमण (green transition) के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण संसाधनों का एक विश्वसनीय स्रोत है।
    - उदाहरण के लिए: द्विपक्षीय व्यापार 28.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर (2024–25) रहा, साथ ही ईवी (EV) बैटरी निर्माण के लिए कोयला, पाम तेल और निकल का आयात।
- **इंडो-पैसिफिक सुरक्षा वास्तुकला:** भारत और इंडोनेशिया समुद्री सुरक्षा को मजबूत करके, समुद्री डकैती (piracy) का मुकाबला करके और नौवहन की स्वतंत्रता सुनिश्चित करके एक स्वतंत्र, खुले और समावेशी इंडो-पैसिफिक (FOIP) को बनाए रखने के लिए सहयोग करते हैं।
    - उदाहरण के लिए: समन्वित गश्त (CORPAT), 'समुद्र शक्ति' नौसैनिक अभ्यास, रक्षा सहयोग, और आईओआरए (IORA), एडीएमएम-प्लस (ADMM-Plus) तथा पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन के माध्यम से सहयोग।
- **संस्थागत तालमेल और ग्लोबल साउथ का नेतृत्व:** प्रमुख लोकतंत्रों और उभरती अर्थव्यवस्थाओं के रूप में, दोनों देश अधिक प्रतिनिधि और बहुध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था को बढ़ावा देते हुए 'आसियान की केंद्रीयता' (ASEAN centrality) को मजबूत करते हैं।
    - उदाहरण के लिए: आसियान, पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन, हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (IORA), और क्रमिक जी20 (G20) अध्यक्षता (2022 में इंडोनेशिया और 2023 में भारत) के माध्यम से सहयोग।
- **नीली अर्थव्यवस्था और सभ्यतागत साझेदारी:** साझा समुद्री हित और सदियों पुराने सांस्कृतिक संबंध दीर्घकालिक रणनीतिक सहयोग के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करते हैं।

- **उदाहरण के लिए**: समुद्री संरक्षण, मत्स्य पालन, तटीय लचीलापन, और रामायण परंपरा, बाली तथा प्रम्बानन मंदिर के माध्यम से सांस्कृतिक कूटनीति में सहयोग।

भारत-इंडोनेशिया संबंधों में प्रमुख चुनौतियाँ क्या हैं?

- **व्यापार असंतुलन और बाजार पहुंच में बाधाएं:** मजबूत व्यापार मात्रा के बावजूद, द्विपक्षीय व्यापार वस्तु-संचालित (commodity-driven) बना हुआ है, जबकि गैर-टैरिफ बाधाएं (NTBs) भारतीय निर्यात के लिए अधिक बाजार पहुंच को प्रतिबंधित करती हैं।
  - उदाहरण के लिए: द्विपक्षीय व्यापार घटकर लगभग 28.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर (2024–25) हो गया, जिसमें भारत के निर्यात को फार्मास्यूटिकल्स, आईटी सेवाओं और कृषि उत्पादों में बाधाओं का सामना करना पड़ा।
- **कनेक्टिविटी और परियोजना कार्यान्वयन की चुनौतियां:** यद्यपि दोनों देश समुद्री कनेक्टिविटी को मजबूत करने पर सहमत हुए हैं, लेकिन रणनीतिक बुनियादी ढांचा परियोजनाओं का समय पर निष्पादन एक चुनौती बना हुआ है।
  - उदाहरण के लिए: सबांग बंदरगाह और अंडमान-आचे कनेक्टिविटी पहल को सुव्यवस्थित अनुमोदन, पर्यावरणीय मंजूरी और बुनियादी ढांचे के विकास के माध्यम से तेजी से कार्यान्वयन की आवश्यकता है।
- **रक्षा औद्योगिक सहयोग:** रक्षा सहयोग का काफी विस्तार हुआ है, लेकिन सहयोग को केवल हथियारों के निर्यात से आगे बढ़कर सह-विकास (co-development), सह-उत्पादन और प्रौद्योगिकी साझेदारी की ओर विकसित होना चाहिए।
  - उदाहरण के लिए: ब्रह्मोस और एस्ट्रा एमके-1 (Astra Mk-1) मिसाइल समझौतों के बाद, रक्षा निर्माण और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण में अधिक सहयोग की आवश्यकता है।
- **विनियामक और निवेश संबंधी बाधाएं:** जटिल विनियामक प्रक्रियाएं और नीतिगत अनिश्चितताएं द्विपक्षीय निवेश और निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रभावित करती रहती हैं।
  - उदाहरण के लिए: भारतीय कंपनियों को इंडोनेशिया में लाइसेंसिंग, अनुपालन आवश्यकताओं और निवेश अनुमोदन से संबंधित चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
- **आसियान के भीतर संस्थागत बाधाएं:** आसियान की सर्वसम्मति-आधारित (consensus-based) निर्णय लेने की प्रक्रिया अक्सर क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियों के लिए समन्वित प्रतिक्रियाओं को सीमित करती है, जो व्यापक इंडो-पैसिफिक सहयोग को प्रभावित करती है।
  - उदाहरण के लिए: दक्षिण चीन सागर पर आसियान की भिन्न स्थिति (divergent positions) सामूहिक समुद्री पहलों की गुंजाइश को कम करती है।
- **लोगों के बीच और ज्ञान से जुड़ी सीमित साझेदारियां:** सभ्यतागत स्तर पर मजबूत संबंधों के बावजूद, शिक्षा, पर्यटन, शोध और इनोवेशन के क्षेत्र में आदान-प्रदान अपनी क्षमता से कम बना हुआ है।
  - उदाहरण के लिए: रणनीतिक संबंधों की तुलना में छात्रों की गतिशीलता, शैक्षणिक सहयोग और स्टार्ट-अप साझेदारी अपेक्षाकृत मामूली बनी हुई है।

भारत और इंडोनेशिया अपनी रणनीतिक साझेदारी को कैसे गहरा कर सकते हैं?

- **सुरक्षा और रक्षा एकीकरण को मजबूत करना:** क्रेता-विक्रेता संबंध से आगे बढ़कर दीर्घकालिक रक्षा औद्योगिक सहयोग और एकीकृत समुद्री सुरक्षा की ओर परिवर्तन करके हाल के रक्षा समझौतों को और मजबूत करना।
    - उदाहरण के लिए: ब्रह्मोस और एस्ट्रा एमके-1 सिस्टम के लिए रखरखाव, मरम्मत और ओवरहाल (MRO) हब स्थापित करना, जबकि अंडमान सागर में वास्तविक समय की समुद्री डोमेन जागरूकता (MDA) और समन्वित प्रतिक्रियाओं के लिए आईएफसी-आईओआर (IFC-IOR) में इंडोनेशिया के अंतर्राष्ट्रीय संपर्क अधिकारी (ILO) का लाभ उठाना।
- **व्यापार और आपूर्ति शृंखला एकीकरण में तेजी लाना:** भविष्य के आर्थिक विकास के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण क्षेत्रों में लचीली आपूर्ति शृंखलाओं का निर्माण करते हुए बाजार पहुंच की बाधाओं को कम करना।
    - उदाहरण के लिए: माल में आसियान-भारत व्यापार समझौते (AITIGA) की समीक्षा को फास्ट-ट्रैक करना, ईवी निर्माण के लिए भारत की पीएलआई (PLI) योजना के साथ इंडोनेशिया के निकल भंडार को एकीकृत करना, और जन औषधि मॉडल के आधार पर सरकार-से-सरकार (G2G) फार्मास्युटिकल सहयोग का विस्तार करना।
- **अंडमान-आचे समुद्री विकास गलियारे का विकास:** पूर्वी हिंद महासागर को जोड़ने वाले एकीकृत समुद्री, लॉजिस्टिक्स और आर्थिक गलियारे में हालिया रणनीतिक प्रतिबद्धताओं को परिवर्तित करना।
    - उदाहरण के लिए: बंदरगाह के बुनियादी ढांचे, तटीय आर्थिक क्षेत्रों, पर्यटन और मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक्स के माध्यम से सबांग बंदरगाह-अंडमान कनेक्टिविटी पहल को चालू करना।
- **डिजिटल और फ्रंटियर प्रौद्योगिकी साझेदारी को बढ़ाना:** विश्वसनीय और समावेशी डिजिटल पारिस्थितिक तंत्र (ecosystems) बनाने के लिए भारत के डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे और सीमांत प्रौद्योगिकियों (frontier technologies) का लाभ उठाना।
    - उदाहरण के लिए: भारत के ओएनडीसी (ONDC) आर्किटेक्चर के आधार पर 'इंडोनेशिया ओपन नेटवर्क' (ION) का विस्तार करना, यूपीआई-क्यूआरआईएस (UPI–QRIS) सीमा-पार भुगतानों को चालू करना, और गगनयान के लिए इंडोनेशिया के बियाक (Biak) ट्रैकिंग स्टेशन के माध्यम से अंतरिक्ष सहयोग को मजबूत करना।
- **नीली अर्थव्यवस्था और ग्लोबल साउथ के नेतृत्व को बढ़ावा देना:** संधारणीय महासागर शासन पर सहयोग को गहरा करना और साथ ही वैश्विक मंचों पर विकासशील देशों के हितों को संयुक्त रूप से आगे बढ़ाना।
    - उदाहरण के लिए: समुद्री संरक्षण, आपदा लचीलापन, संधारणीय मत्स्य पालन पर इंडो-पैसिफिक ओशियंस इनिशिएटिव (IPOI) और इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन (IORA) के तहत सहयोग मजबूत करना और G20 तथा ब्रिक्स (BRICS) के माध्यम से समन्वित पहल करना।